

সন্ন্যাস গ্ৰহন

উপরति; बहिती कबूम सकलरे सन्न्यासबिधान द्वारा ये परतियाग, ताहार नाम उपरति, (सन्न्यास ग्बहनरे कथा बला हय.छे एवंग तनि सन्न्यास लाडरे अडकिारी कनि ताहा ब्रह्मज्जु गुरुइ बिधान देबेने।)।उपरति हलो सन्न्यासाश्रम ग्रहणपूर्वक शास्त्रबहिती कार्याकलाप परतियाग। तनि संसार त्याग करिया ब्रह्मज्जु गुरु नकिट थाकिया बदे, उपनिषिदादि, बिभिन्न दर्शन शास्त्ररे व्याख्या गुरु मुखे श्रवन करबिने एवंग उहा कि पद्धततिे बिचार करतिे हईबे ताहार उपदेशे प्राप्ति हईबेने। ताहार पर बाकी चारटि अवस्था , बहुदक, कुटीचक, हंस एवंग परमहंस ,

१) बहुदक = शंकराचार्यरे चारटि मठ समते अनुयाय तीरथक्षेत्रे सदगुरु नरिदशे अनुयायी ड्रमन करबिने एवंग ऐसब तीरथक्षेत्रे कि करतिे हईबे तनिहि नरिदशे देबिने।

२) कुटीचक = सदगुरु नरिदशे अनुयायी नरिजनके कुटिरि बँधे साधन डजन करबिने।

३) इहार अर्थ ऐ हय 'अहं' ओ 'स' शब्द दुटि मिले 'हंस' हय.; अहं हल 'आमि' ओ स हल 'से', एकत्रे अर्थ 'आमि से'। एखाने, 'आमि' बोळाय. जीवात्मा वा जीवतम, जीवन्त आत्मा, एवंग 'तनि' परमात्मा। ऐ सम्पर्कटि अद्वैत दर्शनरे प्रतफिलन करे, या जीवात्मा ओ परमात्मार एकत्वके बोळाय।

तनि अवधूतबशिषे, गृहीन, त्यागी, स्त्री-संसर्गवर्जति, कामनारहिती, अयाचक-व्रती, यतबिशिषे

१४) परमहंस = सदगुरु नरिदशे अनुयायी नरिबकिल्प समाधतिे बसिया सिद्धिलाड करबिने। अतएव ऐ ज्ञानमार्गरे साधना यद शिस्त्र अनुयायी धरा हय. कोटतिे एकजन। एगुलरि उपदेशे प्राप्ति हईया तनि पररे पर अवस्था लाड करबिने। परे ब्रह्मज्जु गुरु नरिदशे अनुयायी तनि गुरुगिरि करबिने अथवा अन्यपथे चलबिने ताहा गुरुइ नरिदशे करबिने। यद ताँहाके गुरुदेवे संसार करार परामर्श देने अथवा लोकालये गुरुगिरि उपदेशे देने तबेइ तनि लोकचक्षुर सामने आसबिने।